P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* (Part-2) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

हिन्दी गद्य के सशक्त हस्ताक्षर : डॉ0 एन चन्द्रशेखरन नायर

अलंकार विजय
शोधार्थी,
हिन्दी विभाग,
अवध विश्वविद्यालय,
फैजाबाद, उ0 प्र0, भारत

सारांश

भारतीयता के संरक्षक साहित्यकार और केरलीय प्रेमचन्द के नाम से विख्यात डॉ0 एन चन्द्रशेखरन नायर हिन्दी गद्य विधाओं को अपनी लेखनी से आलोकित किया है, और हिन्दी साहित्य के गद्य एवं पद्य दोनों विधाओं में सिद्धि प्राप्त की है। डॉ0 नायर एक प्राध्यापक एवं साहित्यकार के साथ –साथ गांधीवादी विचार धारा के पोषक है। इनका व्यक्तितत्व, आदर्श एवं राष्ट[a]प्रेम इनकी रचना संसार में दिखायी पड़ती है।

मुख्य शब्द : डॉ0 एन चन्द्रशेखरन नायर, नाट्य कृतियाँ।

प्रस्तावना

डॉ0 नायर जी के नाट्य कृतियों से स्पष्ट होता है कि ये ''सचेतन और विचारशील नाटक कार है।'' [1] सन् 1972 में तीन नाटकों का संकलन द्विवेणी, बदला, और 'कुरूक्षेत्र जागता है' प्रकाशित हुआ। 'कुरुक्षेत्र जागता है' नाटक मे आधुनिक यांत्रिक उलझनो से जूझते मानव के विचारो का परिषोधन किया है । वही बदला नाटक मे सामाजिक पृश्ठभूमि मे नारी जीवन की समस्थाओ को प्रस्तुत किया गया है । द्विवेणी नाटक विडम्बनापूर्ण आधुनिक वैज्ञानिक जीवन की जडता को अंकित करता है । 'युग–संगम' नाटक अपने नाम के अनुरुप पौराणिक और आधुनिक युगो की कथा तथा पात्रो का संगम है इस नाटक मे नायर जी ने त्रेता, द्वापर तथा कलयुग के अवतारो राम, कृष्ण, गॉधी की पीड़ा को रूपायित किया है। नाटक मे कृष्ण के षब्द "सत्य वह भावना है जिसमें लौकिक एव अलौकिक सारे गुण अन्तर्निहित है ।"[2] नाटक मे यही दिखाया गया है कि मानव जीवन संघर्षो और दुःखो से भरा होता है ।

डॉ0 नायर जी की तृतीय नाट्यकृति 'सेवाश्रम 'कुरूक्षेत्र जागता है का ही विस्तृत रूप है। पूरे नाटक मे सत्ता परिवर्तन के साथ राष्ट्रीयता का स्वर मुखरित हुआ है। नाटक की समाप्ति इस अन्तिम कथन से होती है – ''जब कुरूक्षेत्र एक बार जग गया फिर दुर्बल हृदय लेकर क्या करना ।'' [3] डॉ0 नायर के नाटकों में ''प्रकाश, संगीत, नेपथ्य, प्रयोग आदि प्रस्तुति परक तत्वों के प्रति नाटककार की रूचि और इन तत्वों का ज्ञान नाटक में आद्यन्त मिलता है।''[4] 'देवयानी' का आख्यान महाभारत के आदि पर्व में वर्णित है। यह लधुनाटक देवयानी, शर्मिष्ठा, ययाति, कच, पुरू, शुक्राचार्य से सम्बन्धित प्रसिद्ध पौराणिक आख्यान को लेकर चलता है। देवयानी ययाति और कचकुमार के प्रेम त्रिकोण को अत्यन्त मनोवैज्ञानिक रूप से चित्रित किया गया है। देवयानी के माध्यम से भारतीय नारी को आदर्श रूप प्रस्तुत किया गया है। इसकी झलक तब दिखायी पडती जब शुक्राचार्य ने उसे अपने पति के सुख दुःख के बारे में चिन्ता करने को अबलापन की संज्ञा देते तो देवयानी उन्हें सटीक उत्तर देती है ''अगर अपने पति के सुख दुःख पर ध्यान देना अबलापन है तो भूख प्यास लगने पर खाना भी अबलापन है बच्चे को दूध पिलाना भी अबलापन है।''[5]

डॉ0 नायर ने तीन एकांकी की रचना की है। जिनमें धर्म और अधर्म, सृष्टि का रहस्य और महाभारत का वीर पुरूष है। सृष्टि का रहस्य एकांकी में डॉ0 नायर जी ने वारांगना और उसकी पुत्री के चरित्र को उदात्तता को प्रतिष्ठित किया है जो वारांगना के कथन – '' मैने अपने प्राणों पर खेल कर ही महर्षि के पास जाने का वचन दिया है। इसलिए कि यह देश सुख चैन से रहे, दुर्भिक्ष और आकाल से बचे।''[6]

महाभारत का वीर पुरूष एकांकी डॉ0 नायर कर्ण के व्यक्तित्व को उभारा है। इस संदर्भ में विष्णु प्रभाकर जी के शब्द उल्लेखनीय है– ''महाभारत के सहस्त्रों पात्रों में मेरी जिज्ञासा और श्रद्धा कर्ण के प्रति जागी है उस

विनाशकारी युद्ध का कारण वही तो है। उसके प्रति समाज ने जो सलूक किया था उसका अन्त महाभारत में ही हो सकता था। ''[7]

धर्म और अधर्म एकांकी के पात्रों का स्वरूप प्रायः महाभारत में वर्णित स्वरूप जैसा ही है।

डॉ0 नायर जी स्वीकार करते है–'' युधिष्ठिर और दुर्योधन के प्रति मेरा आर्कषण विल्कुल तटस्थ है। युधिष्ठिर और दुर्योधन दोनो ही धर्म के आश्रय में बोलते है। लेकिन विचारशील पाठक देख सकते है कि कौन धार्मिक है और आधार्मिक ।''[8]

डॉ0 नायर जी ने अपने समस्त नाटक में गाँधी जी के मानवतावादी दृष्टिकोण तथा मानव के शाश्वत मूल्यों के स्थापना के उद्देश्य से नाटकों का सृजन किया है। इस दृष्टि से वह भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, जयशंकर प्रसाद, हरिकृष्ण प्रेमी और उदय शंकर भट्ट की परम्परा में आते है।

डॉ0 नायर जी का सन् 1964 में प्रकाशित 'हार की जीत' प्रथम कहानी संग्रह है इसमें संकलित आठ कहानियों में प्रथम कहानी 'बाप का बेटा' प्रगतिशील विचारधारा से प्रेरित कहानी है जो कला के उच्चादर्श को प्रस्तुत करती है । 'हार की जीत' कहानी पतोन्मुख सामन्ती चेतना पर प्रहार करने के साथ–साथ भारतीय नारी के निष्कलुष स्फटिक निर्मल व्यक्तित्व को उजागर करने वाली कहानी है।

'भवेति अम्मे' नायिका प्रधान कहानी है जिसमें लेखक पूरा ध्यान इसी चरित्र का केन्द्र रहा है। 'काठ के कफन' कहानी में मात्तन नामक एक कफन विकेता का चरित्र चित्रण है जो अपनी विषम परिस्थितियों से जुझता हुआ अपनी पत्नी और पुत्री की मृत्यु स्वीकारता हुआ अन्ततः स्वयं भी मृत्यु का वरण कर लेता है। 'चमार की बेटी' कहानी में कान्ती के जोगी एक निर्धन पिता है जो बेटी की प्रतिभा को तो स्वीकारता है साथ ही उसकी जिम्मेदारी को भी महसूस करता है जिसके आड़े उसकी निर्धनता सदैव आती है। 'अजन्ता का कलाकार' एक ऐसा पात्र है जो अपनी प्रतिभा से सुन्दर से सुन्दर कलाकृति को सजीव रूप में चित्रित करने में सक्षम है । सौन्दर्य की सृष्टि कर देने वाले बदसूरत कलाकार और सौन्दर्य की अधिष्ठात्री राज लक्ष्मी के मानसिक द्वन्द को प्रस्तुत किया गया है। 'कान्ह गायब हो गया' कहानी में लेखक ने मन्दिर क्षेत्र में होने वाले अनाचार और कृष्ण के गायब हो जाने की कुतुहलमय स्थिति को प्रस्तुत किया है। 'बापू का संकेत' गॉधीवादी आदर्शो को प्रस्तुत करने वाली कहानी है। पाप से घृणा करो, पापी से नहीं का उदार अहिंसावादी सिद्धान्त कहानी में रूपायित है। राम लाल सुनार का हृदय परिवर्तन बापू के संकेत नाम की सार्थकता का द्योतक है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोधपत्र में हिन्दी साहित्य में डॉ0 नायर के नाटक, एकांकी और कहानी का संक्षिप्त अंश प्रस्तुत है।

निष्कर्ष

'प्रोफेसर और रसोइया' डॉ0 नायर जी का द्वितीय कहानी संग्रह है। इसमें ग्यारह कहानियॉ संग्रहीत है जिसमें कलाकार रामू, यह खेल, बेचारा नक्सल, अब कलयुग है, प्रेम बनाम प्रेम, मकान आदि प्रमुख है। निष्कर्षतः डॉ0 नायर जी की ''कहानियॉ कल्पना विलास से परे हटकर यथार्थ बोध के समीप जाने के प्रयत्न में तत्पर दिखायी देती है। जो महत्वपूर्ण तथा निजी अनुभव पर आधृत है।''[9]

अंत टिप्पणी

1. *केरल का स्वतंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य डॉ0 रेखा शर्मा पृ0 97*
2. *युग–संगम डॉ0 एन0 चन्द्रशेखरन नायर पृ0 90*
3. *कुरूक्षेत्र जागता है डॉ0 नायर पृ0 99*
4. *डॉ0 एन0 चन्द्रशेखरन नायर का नाट्य साहित्य प्रो0 एम0एस0 भरन पृ0 73*
5. *देवयानी डॉ0 नायर पृ0 60*
6. *सृष्टि का रहस्य डॉ0 नायर पृ0 14*
7. *महाभारत का वीर पुरूष, पुरोवाक विष्णु प्रभाकर*
8. *धर्म और अधर्म दो शब्द डॉ0 नायर*
9. *चन्द्रशेखरन नायर अभिनन्दन ग्रन्थ, प्राचार्य कीर्ति कुमार करूण पृ0 144*